International Journal of Applied Research 2017; 3(3): 53-54

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(3): 53-54
www.allresearchjournal.com
Received: 15-01-2017
Accepted: 17-02-2017

डॉ. दीपक भारद्वाज
सह आचार्य, चित्रकला
राजकीय मीरा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत।

Correspondence
डॉ. दीपक भारद्वाज
सह आचार्य, चित्रकला
राजकीय मीरा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत।

छापा कला एवं राजस्थान के छापा चित्रकार

डॉ. दीपक भारद्वाज

सारांश
वर्तमान में पारम्परिक कला शैलियों के बन्धन से परे अभिव्यक्ति के नये तरीकों पर अन्वेषण हो रहे है। परिवर्तन की इस समूची प्रक्रिया से गुजरते हुये आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सृजन को नये अर्थ देने और कला के समसामयिक विकास में राजस्थान के प्रमुख छापाकारों का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मूल शब्दः छापा कला, पारम्परिक कला शैलियों, अभिव्यक्ति

प्रस्तावना
छापा कला एवं राजस्थान के छापा चित्रकारः जब मानव कंदराओं में रहता था तब कंदराओं की दीवारों पर अपनी उपस्थिति हाथ के छापों से करता रहा है। छापों की एतिहासिक शुरूआत देखे तो धरातलीय छापों का प्रचलन 800 ईस्वी के आस–पास, ठप्पों से वस्त्र छपाई, 828 ई. मे प्रथम ''रिलीफ प्रिंट'' जिस पर दिनांक अंकित है। डायमं सूत्र चीन में छापा गया। इसी क्रम में यूरोप में 1200 ईस्वी तक काष्ठ ठप्पों का वस्त्र उद्योग में प्रयोग प्रारम्भ हुआ।
सन् 1450 में गुटन बर्ग ने छापा मशीन का आविष्कार कर छापा कला में क्रान्ति उत्पन्न की। वुडकट का प्रयोग प्रारम्भ में पुस्तक सज्जा में किया जाता था। 1482 ईस्वी में प्रथम रंगीन वुडकट प्रिंट प्रकाशित हुआ। 1510 ईस्वी में छापा प्रकाश युक्त वुडकट प्रिन्ट छापने में सफलता मिली। इसी क्रम में महान कलाकार ड्यूरर, होल्बाईन आदि के वुडकट छापे तैयार कर श्रृंखलाओं का प्रकाशन किया गया।
थॉमस वीवेक वुड को ''एनग्रेविंग'' का जन्मदाता माना जाता है। जिसने सन् 1753 में प्रथम वुडकट एन्ग्रेविंग छापा तैयार कर इस माध्यम में नवीन संम्भावनाओं को जन्म दिया। धरातलीय छापों में लीनोनियम का अपना महत्व है जिसे सर्वप्रथम सन् 1920 में क्लाऊड़े प्लाईट ने प्रारम्भ किया था। इसे पिकासो जैसे महान कलाकार ने भी अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया था।
द्वितीय विधि एन्ताग्लियों प्रिन्टिंग की है। जिसकी शुरूआत तांबे की प्लेट पर एन्ग्रेटिंग से प्रारंभ होती है। इसकी शुरूआत सन् 1430 में जर्मनी में मानी जाती है। अस माध्यम का विकास होते–होते सन् 1810 तक स्टील एन्ग्रेटिंग, जिंक एन्ग्रेविंग एवं आज पी.वी.सी. एनग्रेविंग प्रिन्ट तक होने लगे है। इसका कलात्मक प्रयोग सन् 1503 में परमोनियों ने किया तथा बेनदेतो, वानेक, रेम्ब्रांट, गोया जैसे महान कलाकारों का प्रिय माध्यम रहा।
इसी प्रकार ड्रायपोईट सन् 1480 में, मेजोटिंट सन् 1624 में प्लेनोग्राफी विधि को भी कलाकारों ने स्वीकार कर नवीन प्रयोगो से वर्तमान में अत्यधिक लोकप्रिय बनाया है।
सन् 1798 में म्यूनिख से सेनफेल्डर ने ''लीथोग्राफी'' का अविष्कार किया था। जिसे देलाक्रा, गोया, जेरिको, लूत्रे, दामीर आदि ने स्वीकार किया था। आज इस माध्यम का पूर्ण प्रयोग मशीनीकरण द्वारा ''ऑफसेट प्रिन्टिंग'' में हुआ है। जिसने छापा चित्रण तकनीक में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये है।
इस प्रकार कलाकार की अन्वेषी प्रकृति ने एक–एक माध्यम में अनेकों सम्भावनाओं को जोड़ा एवं अपनी अभिव्यक्ति के लिये प्रयुक्त किया। तकनीकी परिपक्वता, वैज्ञानिक विकास एवं कलाकार की महत्वाकांक्षा व अन्वेषणवृति ने छापा चित्रण माध्यम को आज के कला जगत का महत्वपूर्ण अंग बना दिया है। वर्तमान में इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कलाकृति के रूप में स्वीकार किया गया है।
''ग्राफिक शब्द ग्रीक भाषा ''ग्राफिन'' शब्द से लिया गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ लिखना या अंकन करना है। इसी प्रकार प्रिटिंग से अभिप्राय कलाकार द्वारा निर्मित अपनी कल्पना रूप धरातल (प्लेट) से प्रिटिंग इंक को धरातल पर लगाकर छापा मशीन के माध्यम से कागज पर छापा लेना है। केवल मौलिक छापों को ही इस माध्यम में कला माना गया है।

इस प्रकार वे सभी कार्य जो कलाकार ने अपनी परिकल्पना को साकार करने के लिये एक रंगीय या बहुरंगीय छापे तैयार किये हो को प्रिंट मेकिंग कहा जाता है।

भारत में इस विधा के प्राचीन प्रमाण आदिमानव की कन्दराओं में देखे जा सकते है। सर्वप्रथम गोवा में छापा मशीन स्थापित की गई है। इसी प्रकार लीथोग्राफी की परम्परा की शुरूआत भी दो फ्रांसिसी छापाकारों ने की है। जिन्होनें सर्वप्रथम सन् 1822 में कलकत्ता में लिथोग्राफ की शुरूआत की। बाद में देश की कला संस्थाओं में इस विधा की विधिवत शिक्षा दी जाने लगी। वर्तमान में देश के कई ललित कला विभागो में यह विषय स्वतन्त्र रूप से स्नातकोत्तर तक पढाया जाता है।

विश्व रूप बोस, नन्दलाल बसु, अब्दुर रहमान चुगतई, विनोद बिहारी मुखर्जी, रामकिंकर बैज, कँवल कृष्ण, देवयानी कृष्ण, सोमनाथ होर, के.जी. सुब्रहण्यम्, कृष्ण रेड्डी, ज्योति भट्ट आदि अनेकों भारतीय कलाकारों ने समर्पित भाव से भारतीय प्रिन्ट तकनीक को विकसित कर सम्मानित स्थान पाया है। वर्तमान में देश के प्रमुख कला केन्द्रो, कार्यशालाओं एवं व्यक्तिगत कार्यशालाओं में प्रिंट मेकिंग की सुविधाएँ उपलब्ध है।

सन् 1973 में राजस्थान राज्य की प्रथम एचिंग प्रिटिंग प्रेस उदयपुर विश्वविद्यालय में स्थापित की गई थी। इससे पूर्व राज्य में बुडकट, लीनोकट या मोनोपिंगट ही इस विधा में देखे जाते थे। प्रोफेसर वाई. के. शुक्ला ने वनस्थली विद्यापीठ में बुडकट एवं लीनोकट प्रिटिंग प्रारंभ की। एचिंग एवं एन्ताग्लियो प्रिटिंग की शुरूआत राजस्थान में सन् 1975 के आस पास हुई।

सन् 1972–73 मे सुरेश शर्मा एवं लक्ष्मीलाल वर्मा ने डायपोईट प्रिंटस का विकास किया। अमेरिका के ललित कला संस्थान से सुरेश शर्मा ने इस विषय की शिक्षा प्राप्तकी एवं विश्व के अन्य छापा चित्रकारों के सम्पर्क में आये।

शैल चोयल ने सन् 1975 में स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट्स लन्दन में ब्रिटिश काउन्सिल की छात्रवृत्ति पर प्रिंट मेकिंग का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर छापा चित्रकार के रूप में पहचान मिली है।

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में सन् 1982 में लीथो मशीन क्रय की गई थी। तब से यह माध्यम भी कलाकारों में लोकप्रिय हो रहा है। वर्तमान में यहां एन्ताग्लियों, सरफेस, लीथोग्राफी एवं सिल्क स्क्रीन प्रिटिंग की सुविधाएं उपलब्ध है। वर्तमान में 'टखमण' कला संस्था व पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र में सुसज्जित कार्यशाला स्थापित हो चुकी है। राजकीय महाविद्यालय नाथद्वारा, बूंदी एवं राजस्थान विश्वविद्यालय में भी एंचिग प्रिटिंग मशीन स्थापित की जा चुकी है।

राजस्थान के वरिष्ठ कलाकार एवं कलाविद् नारायण आचार्य मात्र ऐसे छापा चित्रकार हैं जिन्होनें दिल्ली में रह कर इस विधा के गुणों का अवगाहण कर राष्ट्रीय स्तर पर प्रिंट मेकर के रूप में स्थापित हुए। इनकी कृतियों में अमूर्त बिंबो को देखा जा सकता है। इनका प्रिय माध्यम एन्टाग्लियों व कोलोग्राफ है।

सुरेश शर्मा छापा कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपने ''शान्ति निकेतन से वुडकट एवं अमेरिकर से नवीनतम माध्यमों एवं तकनीक का ज्ञान प्राप्त कर राजस्थान में कार्य प्रारंभ करने से राज्य में एचिंग, एन्ताग्नियों के शुगर लिफ्टिंग, एनग्रेविंग ड्रायपोईट को प्रारंभ किया। उनके प्रिन्टस चित्र की तरह विषयवस्तु एवं आकारों के बंधन से मुक्त है। पूर्ण अमूर्तन एवं आकार विहीन रंगीन प्रिंटस् इनकी प्रमुख विशेषता है।

भवानीशंकर वर्मा– प्रिन्ट मेकिंग माध्यम में स्नातकोतर डिग्रीधारी प्रथम व आज तक एकमात्र कलाकार है। बड़ौदा में छापा कला की बारीकियों को ग्रहण किया। सन् 1971 में वनस्थली विद्यापीठ में शिक्षक के रूप में नियुक्ति के पश्चात् वहां पर उपलब्ध साधनों से कलर लिनों प्रिंट एवं एचिंग प्रिंटस पर कार्य कर रहे है। लिथोग्राफी भी इनका प्रिय माध्यम है। रेखाओं की प्रधानता देते हुए श्वेत श्याम प्रिंटस में यदा–कदा रंगो का स्पर्श कराते है। विषय प्रदर्शन में शर्मा का अपना तरीका है। जिसमें आलंकारिक रेखांकन महत्वपूर्ण है।

शैल चोयल ने छापा कला का लन्दन से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इनके छापा चित्रों में कोलोग्राफिक व्यू आने लगा एवं श्वेत–श्याम एचिंग व एक्टाटिंट की विविधता प्राप्त कर कार्य करने लगे। आपने राजस्थान परिवेश को लेकर एक वर्षीय रंगयोजना में छापा चित्र तैयार कर कई पुरस्कार अर्जित किये है।

लक्ष्मीलाल वर्मा– राज्य के प्रथम छापा कलाकार हैं जिनका बुडकट प्रिंट राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में प्रदर्शित हुआ। सन् 1970 से 1980 के मध्य निर्मित बहुरंगीय ड्राईपोईट प्रिंट एनग्रेविंग के साथ ज्यामितिक आकारों के संयोजन राष्ट्रीय स्तर पर सराहे गये। श्री वर्मा वर्तमान में एन्ताग्लियों एवं विस्कोसिटी में नवीनतम प्रयोग कर रहे है।

इसी विधा को राज्य में पल्लवित एवं विकसित करने स्कूल ऑफ आर्ट कार्यशाला की स्थापना कर सुचारू ढंग से चलाने में विद्यासागर उपाध्याय सदैव आगे रहे है। आपने प्रिंट मेकिंग की सभी विधाओं में अपना प्रभाव रखते हुए अनेको छापे तैयार कर राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों में व कार्यशालाओं में स्थान पाया है।

राज्य के इशाक मोहम्मद, युगल किशोर शर्मा एवं किरण मुर्डिया ने दिल्ली की गढी कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रिंट मेकिंग की सिल्क स्क्रीन लिथोग्राफी एवं एचिंग माध्यमों में कार्य किया है। दिलीप सिंह चौहान, शब्बीर हसन काजी जैसे चित्रकारों ने भी इस विधा में कार्य किया है। इन्होनें छापा कला के विविध माध्यमों का समय–समय पर प्रयोग किया है।

उदयपुर के रामकृष्ण शर्मा, अनिल दुग्गड, जयपुर के गोपाल शर्मा, हरिशंकर गुप्ता, हरशिव शर्मा, अब्दुल मजीद, वीरेन्द्र पाटनी आदि के प्रिंट राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में स्थान प्राप्त कर चुके है।

राजस्थान ललित कला अकादमी की वार्षिक प्रदर्शनी में प्रिंट मेकिंग को प्रारंभ से ही महत्व प्रदान किया गया व दो श्रेष्ठ प्रिन्टस हेतु पुरस्कार सुरक्षित रखें। इसी क्रम में राज्य के अनेकों कलाकार पुरस्कृत हो चुके है। जिनमें रामनिवास वर्मा, तिलकराज, जवानसिंह, मोहन शर्मा, सुरजीत कौर, रेखा भटनागर, चरण शर्मा, सुनीत धिल्डियाल, विनय शर्मा प्रमुख है।

वर्तमान में राजस्थान में प्रिन्टस मेकर्स की एक लम्बी श्रृंखला खडी है जिनमें रामेश्वर सिंह, बसन्त कश्यप, अजय सिंह, अलंकार गोस्वामी, आस्था फलावत, चेतन पाटीदार, दिलीप शर्मा, इन्दुसिंह, जग–मोहन माथोडिया, अनिल गुप्ता, दीपक भारद्धाज, मधुकान्त मूंदडा, महेशसिंह, नेहा भार्गव, निगर सुल्तान, फूलसिंह, रामानुज पंचोली, रामावतार सोनी, सपना शर्मा, शाहिद परवेज, शंकर शर्मा, शालिनी सिंह, शीतल चौधरी, सुब्रतो मंडल, सुरेन्द्रपाल जोशी, ताराचंद विजय जोशी आदि प्रमुख है।

वर्तमान में इस विधा में युवा कलाकारों की रूचि बढ़ी है। वार्षिक प्रदर्शनी में भी भागीदारी नजर आ रही है। राज्य के कुछ कलाकार इस विधा में महत्वपूर्ण प्रयोग कर रहे है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे प्रयोगो से भी परिचित है। छापा चित्रण की गहल बारीकियों का ज्ञान अर्जित कर रहे है, तथा इस विधा में महत्वपूर्ण कार्य करने में संकल्परत है।

संदर्भ

1. काजी शब्बीर समकालीन कला और टखमण 28, अप्रकाशित पी.एच.डी. मौ. ला. सु.वि.वि. उदयपुर पृष्ठ–114
2. उपाध्याय विद्यासागर, राजस्थान की समसामयिक कला, प्रकााक– राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर– 1989, पृष्ठ 37
3. शेष हेमन्त, राजस्थान की सम सामयिक कला, प्रकाशक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर– 1989
4. चतुर्वेदी ममता, समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंन्थ अकादमी, जयपुर– 2008
5. व्यास राजेश कुमार, कलात्मक, प्रकाशक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर– 2010